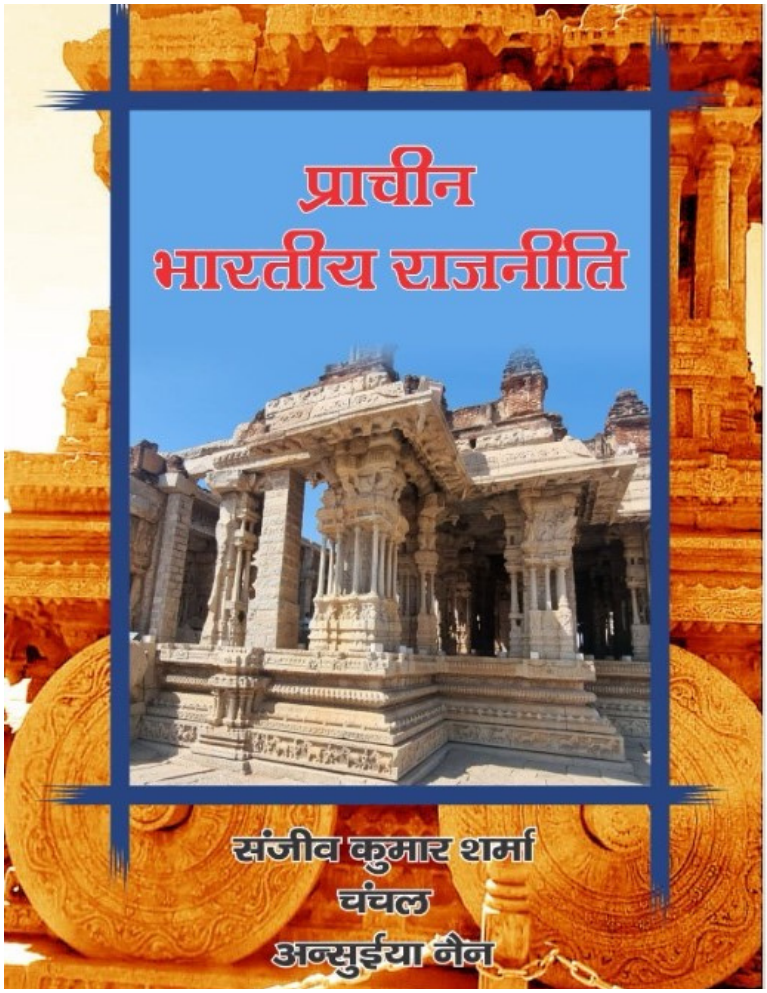

प्रस्तुत पुस्तक प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिन्तन के विभिन्न आयामों का शोधपरक तथा मूल सन्दर्भ युक्त विवरण एवं विवेचन करती है। सुशासन, न्याय, राजधर्म, कराधान, आदर्श राज्य, आदि पक्षों का विशद विश्लेषण करती हुई यह पुस्तक प्राचीन भारतीय राजनीति का एक समग्र तथा सुव्यवस्थित रूप प्रस्तुत करती है। यह पुस्तक भारतीय ज्ञान एवं चिन्तन परम्परा का सामाजिक–राजनीतिक दृष्टि से अवगाहन कर अनेक नूतन पक्षों को उद्घाटित करती है।

Get Your Copy

Supplied By:-
General Secretary & Treasurer,
Indian Political Science Association,
Department of Political Science,
Chaudhary Charan Singh University,
Meerut - 250004.
Published By:-
Indian Political Science Association

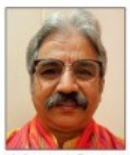

प्रोफेसर संजीव कुमार शर्मा सम्प्रति चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उत्तर प्रदेश) में राजनीति विज्ञान के आचार्य तथा कला संकाय के अध्यक्ष हैं। वे अखिल भारतीय राजनीति विज्ञान परिषद के राष्ट्रीय महासचिव एवं कोषाध्यक्ष हैं। प्रो० शर्मा महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी (बिहार) के पूर्व कुलपति हैं। वे विगत चार दशक से राजनीति विज्ञान विषय के अध्ययन, अध्यापन तथा अनुसन्धान में संलग्न हैं।

डॉ० चंचल प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिन्तन की गम्भीर अध्येता हैं। चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उत्तर प्रदेश) से राजनीति विज्ञान में परास्नातक, विद्या निष्णात तथा विद्या वाचस्पति तथा विधिस्नातक की उपाधि प्राप्त डॉ० चंचल ने भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसन्धान परिषद, नई दिल्ली की पोस्ट डॉक्टोरल फैलोशिप प्राचीन भारत में लोक कल्याण विषय पर पूर्ण की है। सम्प्रति वे स्वतन्त्र अनुसन्धानकर्त्री हैं।

डॉ० अन्सुईया नैन ने दिल्ली विश्वविद्यालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय तथा इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान तथा लोक प्रशासन में उच्च शिक्षा प्राप्त की है। प्राचीन भारतीय राजधर्म एवं सुशासन की अवधारणाओं पर पीएच.डी. उपाधि प्राप्त डॉ० नैन वर्तमान में केरल केन्द्रीय विश्वविद्यालय के अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध विभाग में सहायक आचार्य हैं।

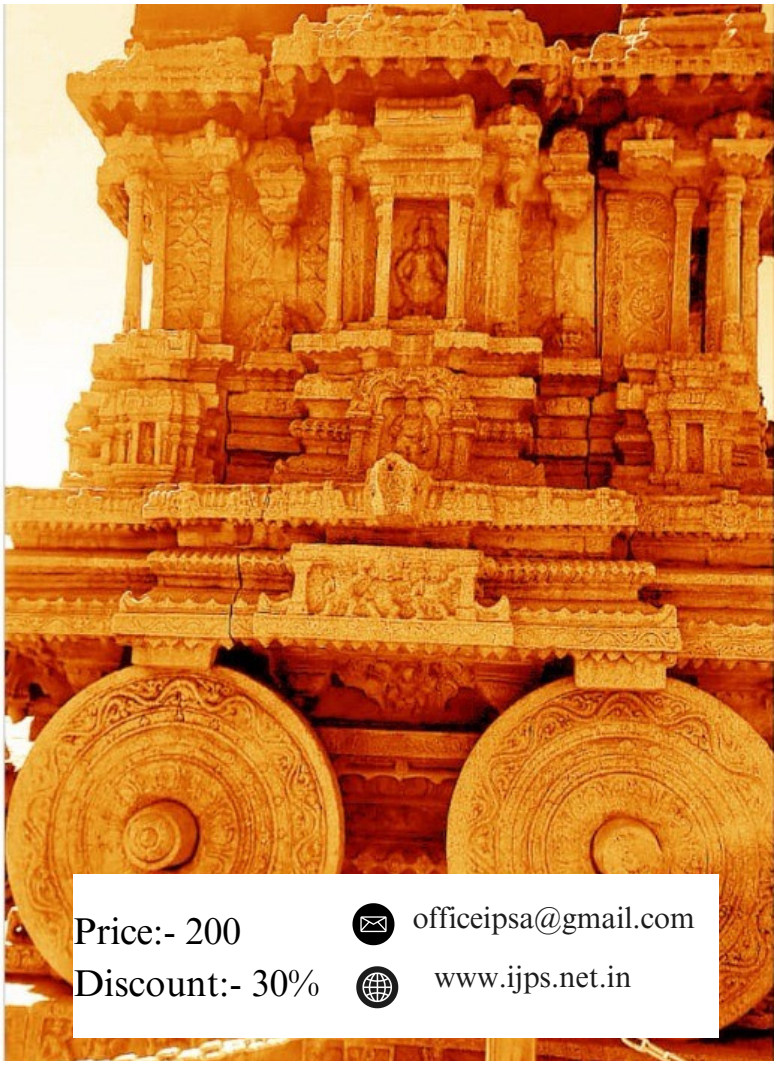

Price:- 200
Discount:- 30%

officeipsa@gmail.com
www.ijps.net.in